अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब
''मदनी पंजसूरह'' से लिये गए मवाद की क़िस्त

हफ़्तावार रिसाला : 189
WEEKLY BOOKLET : 189

Durood Shareef Barkten (Hindi)

दुरूद शरीफ़ की बरकतें

الصلوۃ والسلام علیک یا رسول اللہ وعلی الک واصحبک یا حبیب اللہ

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج ۱ ص ٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

दुरूद शरीफ़ की बरकतें

येह रिसाला (**दुरूद शरीफ़ की बरकतें**)

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद1, गुजरात

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

दुरूद शरीफ़ की बरकतें

दुआए अ़त्तार : या **अल्लाह** पाक ! जो कोई 16 सफ़हात का रिसाला ''दुरूद शरीफ़ की बरकतें'' पढ़ या सुन ले उस से हमेशा के लिये राज़ी हो जा और उस को मदीनए पाक में दुरूदो सलाम पढ़ते हुए जलवए महबूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में आफ़िय्यत के साथ शहादत अ़ता फ़रमा ।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने वाली बच्ची

एक मरतबा ह़ज़रत शैख़ मुह़म्मद बिन सुलैमान जज़ूली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه वुज़ू करने के लिये एक कूवें पर गए मगर उस से पानी निकालने के लिये कोई चीज़ पास न थी । शैख़ परेशान थे कि क्या करूं ? इतने में एक ऊंचे मकान से बच्ची ने देखा तो कहने लगी : या शेख ! आप वोही हैं ना जिन की नेकियों का बड़ा चरचा है ? इस के बा वुजूद आप परेशान हैं कि कूवें से पानी किस त़रह़ निकालूं ! फिर उस बच्ची ने कूवें में अपना लुआ़ब (या'नी थूक) डाल दिया । थोड़ी ही देर में कूवें ०का पानी बढ़ना शुरूअ़ हो गया ह़त्ता कि किनारों से निकल कर ज़मीन पर बहने लगा । शैख़ ने वुज़ू किया और उस बच्ची से कहने लगे : मैं तुम्हें क़सम दे कर पूछता हूं कि तुम ने येह मरतबा कैसे ह़ासिल किया ? उस बच्ची ने जवाब दिया : मैं रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ती हूं । येह सुन कर ह़ज़रत शैख़ सुलैमान

जज़ूली رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने क़सम खाई कि मैं दरबारे रिसालत में पेश करने के लिये दुरूदो सलाम की किताब ज़रूर लिखूंगा। (मताlिड़ल मुसर्रात मुतरजम, स. 34,33) फिर आप ने "दलाइलुल ख़ैरात" नामी किताब तह़रीर फ़रमाई जो बहुत मशहूर हुई।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"बिस्मिल्लाह" के सात हुरूफ़ की निस्बत से दुरूद शरीफ़ के 7 फ़ज़ाइल

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रूह़ परवर है कि जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पाक उस पर **दस रह़मतें** नाज़िल फ़रमाएगा। (صحیح مسلم،ص۱۷۲،حدیث:۹۱۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे रह़मत बुन्याद है : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पाक उस पर **दस रह़मतें** नाज़िल फ़रमाएगा उस के **दस गुनाह मिटा** देगा। (اَلْاِحْسَان بترتیبِ صَحِیْح ابْنِ حَبَّان ج۲ ص۱۳۰ حدیث۹۰۱)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(3) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बरदा बिन नियार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बरकत निशान है : मेरी उम्मत में से जिस ने सिदक़े दिल से एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा, **अल्लाह** करीम उस पर **दस रह़मतें** नाज़िल

फ़रमाएगा और उस के लिये **दस नेकियां** लिखेगा और उस के दस दरजात बुलन्द फ़रमाएगा और उस के **दस गुनाह** मिटा देगा।

(اَلْمُعْجَمُ الْكَبِيْر ج۲۲ ص۱۹۵ حديث۵۱۳)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(4) हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि पैकरे हुस्नो जमाल, रसूले बे मिसाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा कमाल है : हर **जुमुआ़** के दिन मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत किया करो बेशक मेरी उम्मत का दुरूद हर जुमुआ़ के दिन मुझ पर पेश किया जाता है, (क़ियामत के दिन) लोगों में से मेरे ज़ियादा क़रीब वोही शख़्स होगा जिस ने (दुन्या में) मुझ पर **ज़ियादा दुरूद** पढ़ा होगा।

(اَلسُّنَنُ الْكُبرٰى ج۳ ص۳۵۳ حديث۵۹۹۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(5) हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : बेशक क़ियामत के दिन मेरे सब से **ज़ियादा क़रीब** वोह शख़्स होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूद पढ़ा होगा।

(اَلْاِحْسَان بترتيبِ صَحِيْح ابْنِ حَبَّان ج۲ ص۱۳۳ حديث ۹۰۸)

(6) हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ लोगो ! बेशक तुम में से बरोज़े **क़ियामत** उस की दहशतों और हिसाब किताब से **जल्द नजात पाने वाला** वोह शख़्स होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर **कसरत से दुरूद** पढ़ा होगा।

(فِرْدَوْسُ الْاَخْبَار ج۲ ص۴۷۱ حديث۸۲۱۰)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(7) अल्लाह करीम के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर **दुरूदे पाक** पढ़ना तुम्हारे **गुनाहों के लिये मग़िफ़रत** है ।" (اَلْجَامِعُ الصَّغِيْر ص٨٧ حديث:١٤٠٦)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के 5 इर्शादात

﴾1﴿ फ़रमाने सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ है : नबिय्ये करीम, रऊफुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ना गुनाहों को इस क़दर जल्द मिटाता है कि पानी भी आग को उतनी जल्दी नहीं बुझाता और नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर सलाम भेजना गरदनें (या'नी गुलामों को) आज़ाद करने से अफ़्ज़ल है। (تاريخِ بغداد ج٧ ص ١٧٢)

﴾2﴿ फ़रमाने सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا है कि तुम अपनी मजालिस को नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ कर आरास्ता करो। (تاريخِ بغداد ج٧ ص٢١٦)

﴾3﴿ फ़रमाने सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ है कि बेशक दुआ़ ज़मीन व आस्मान के दरमियान ठहरी रहती है और उस से कोई चीज़ ऊपर की त़रफ़ नहीं जाती जब तक तुम अपने नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक न पढ़ लो। (تِرمِذی ج٢ ص٢٨ حديث٤٨٦)

﴾4﴿ फ़रमाने सय्यिदुना मौला अ़ली मुश्किल कुशा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم है कि हर शख़्स की दुआ़ पर्दे में होती है यहां तक कि मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आले मुह़म्मद पर दुरूदे पाक पढ़े।

(معجم اوسط، ج١، ص٢١١، حديث:٧٢١)

﴾5﴿ **फ़रमाने सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़म्र बिन आ़स** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا है कि जो नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ेगा उस पर **अल्लाह** करीम और उस के फ़िरिश्ते 70 मर्तबा रह़मत भेजेंगे। (مُسندِ امام احمدبن حنبل ج۲ ص٦١٤ حدیث٦٧٦٦)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَاسَیِّدَ الْمُرْسَلِیْنَ" *के तीस हुरूफ़ की निस्बत से दुरूद शरीफ़ के 30 मदनी फूल*

﴾1﴿ **अल्लाह** करीम के हुक्म की ता'मील होती है। ﴾2﴿ एक मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले पर दस रह़मतें नाज़िल होती हैं। ﴾3﴿ उस के दस दरजात बुलन्द होते हैं। ﴾4﴿ उस के लिये दस नेकियां लिखी जाती हैं। ﴾5﴿ उस के दस गुनाह मिटाए जाते हैं। ﴾6﴿ दुआ़ से पहले दुरूद शरीफ़ पढ़ना दुआ़ की क़बूलिय्यत का बाइ़स है। ﴾7﴿ दुरूद शरीफ़ पढ़ना नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त का सबब है। ﴾8﴿ दुरूद शरीफ़ पढ़ना गुनाहों की बख़्शिश का बाइ़स है। ﴾9﴿ दुरूद शरीफ़ के ज़रीए **अल्लाह** करीम बन्दे के ग़मों को दूर करता है। ﴾10﴿ दुरूद शरीफ़ पढ़ने के बाइ़स बन्दा क़ियामत के दिन रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क़ुर्ब ह़ासिल करेगा। ﴾11﴿ दुरूद शरीफ़ तंगदस्त के लिये सदक़ा के क़ाइम मक़ाम है। ﴾12﴿ दुरूद शरीफ़ क़ज़ाए ह़ाजात का ज़रीआ़ है। ﴾13﴿ दुरूद शरीफ़ **अल्लाह** करीम की रह़मत और फ़िरिश्तों की दुआ़ का बाइ़स है। ﴾14﴿ दुरूद शरीफ़ अपने पढ़ने वाले के लिये पाकीज़गी और त़हारत का बाइ़स है। ﴾15﴿ दुरूद शरीफ़ से बन्दे को मौत से पहले जन्नत की ख़ुश ख़बरी मिल जाती है। ﴾16﴿ दुरूद शरीफ़ पढ़ना क़ियामत के ख़त़रात से नजात का सबब है। ﴾17﴿ दुरूद शरीफ़ पढ़ने

से बन्दे को भूली हुई बात याद आ जाती है। ﴾18﴿ दुरूद शरीफ़ मजलिस की पाकीज़गी का बाइस है और क़ियामत के दिन येह मजलिस बाइसे हसरत नहीं होगी। ﴾19﴿ दुरूद शरीफ़ पढ़ने से फ़क़्र (तंगदस्ती) दूर होता है। ﴾20﴿ येह अ़मल बन्दे को जन्नत के रास्ते पर डाल देता है। ﴾21﴿ दुरूद शरीफ़ पुल सिरात़ पर बन्दे की रोशनी में इज़ाफ़े का बाइस है। ﴾22﴿ दुरूद शरीफ़ के ज़रीए़ बन्दा ज़ुल्म व जफ़ा से निकल जाता है। ﴾23﴿ दुरूद शरीफ़ पढ़ने की वज्ह से बन्दा आस्मान और ज़मीन में क़ाबिले ता'रीफ़ हो जाता है। ﴾24﴿ दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले को इस अ़मल की वज्ह से उस की ज़ात, अ़मल, उ़म्र और बेहतरी के अस्बाब में बरकत ह़ासिल होती है। ﴾25﴿ दुरूद शरीफ़ रह़मते ख़ुदा वन्दी के ह़ुसूल का ज़रीआ़ है। ﴾26﴿ दुरूद शरीफ़ मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दाइमी मह़ब्बत और इस में ज़ियादत का सबब है और येह (मह़ब्बत) ईमानी उ़कूद में से है। जिस के बिग़ैर ईमान मुकम्मल नहीं होता। ﴾27﴿ दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मह़ब्बत फ़रमाते हैं। ﴾28﴿ दुरूद शरीफ़ पढ़ना, बन्दे की हिदायत और उस की ज़िन्दा दिली का सबब है क्यूं कि जब वोह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ता है और आप का ज़िक्र करता है तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत उस के दिल पर ग़ालिब आ जाती है। ﴾29﴿ दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले का येह ए'ज़ाज़ भी है कि सुल्त़ाने अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में उस का नाम पेश किया जाता है और उस का ज़िक्र होता है। ﴾30﴿ दुरूद शरीफ़ पुल सिरात़ पर साबित क़दमी और सलामती के साथ गुज़रने का बाइस है। (جِلَاءُ الْاَفْهَام ص٢٤٦تا٢٥٣ ملتقطًا)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदार के तलब गार के लिये तोहफ़ा

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى رُوْحِ مُحَمَّدٍ فِي الْاَرْوَاحِ وَعَلٰى جَسَدِهٖ فِي الْاَجْسَادِ وَعَلٰى قَبْرِهٖ فِي الْقُبُوْرِ

नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े उस को ख़्वाब में मेरी **ज़ियारत** होगी और जिस ने ख़्वाब में मुझे देखा वोह मुझे क़ियामत के दिन भी देखेगा और जो मुझे क़ियामत के दिन देख लेगा मैं उस की **शफ़ाअ़त** करूंगा और मैं जिस की शफ़ाअ़त करूंगा वोह **हौज़े कौसर** से पानी पियेगा और उस के जिस्म को **अल्लाह** पाक दोज़ख़ पर ह़राम कर देगा। (كَشْفُ الْغُمَّةِ عَنْ جَمِيعِ الْأُمَّة ج١ ص٣٢٥)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बख़्शिश व मग़्फ़िरत

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كُلَّمَا ذَكَرَهُ الذَّاكِرُوْنَ وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كُلَّمَا غَفَلَ عَنْ ذِكْرِهِ الْغَافِلُوْنَ

किसी शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को वफ़ात के बा'द ख़्वाब में देखा और ह़ाल दर्याफ़्त किया तो आप ने फ़रमाया : **अल्लाह** करीम ने इस दुरूदे पाक की बरकत से मेरी बख़्शिश फ़रमा दी। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات ص٨١ ملخصًا)

माल में ख़ैरो बरकत

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ

साहिबे रूहुल बयान फ़रमाते हैं : जो शख़्स इस दुरूदे पाक को पढ़ेगा उस का मालो दौलत बढ़ता रहेगा ।

(تَفْسِیرُ رُوْحُ الْبَیَان الاحزاب:٥٦ ج٧ ص٢٣٣)

कुव्वते ह़ाफ़िज़ा मज़्बूत हो

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ

وَّعَلٰى اٰلِهٖ كَمَا لَانِهَايَةَ لِكَمَالِكَ وَعَدَّ كَمَالِهٖ

अगर किसी शख़्स को निस्यान या'नी भूल जाने की बीमारी हो तो वोह मग़्रिब और इशा के दरमियान इस दुरूदे पाक को कसरत से पढ़े, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ह़ाफ़िज़ा क़वी हो जाएगा ।

(اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات ص١٩١،١٩٢ ملتقطاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दीन व दुन्या की ने'मतें ह़ासिल कीजिये

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ

وَّعَلٰى اٰلِهٖ عَدَدَ اِنْعَامِ اللّٰهِ وَاِفْضَالِهٖ

इस दुरूदे पाक को पढ़ने से दीन व दुन्या की बे शुमार ने'मतें ह़ासिल होंगी । (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات ص١٥١)

दुन्या व आख़िरत की सुर्ख़रूई

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ بِعَدَدِ

مَا فِيْ جَمِيْعِ الْقُرْاٰنِ حَرْفًا حَرْفًا وَّبِعَدَدِ كُلِّ حَرْفٍ اَلْفًا اَلْفًا

क़ुरआने करीम की तिलावत के बा'द जो शख़्स इस दुरूदे पाक

को पढ़ेगा वोह दुन्या व आख़िरत में सुरख़ुरू रहेगा।

(تَفْسِیر رُوحُ الْبَیَان،الاحزاب:٥٦ ج٧ ص٢٣٤)

ग्यारह हज़ार दुरूद का सवाब

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِہٖ
صَلٰوۃً اَنْتَ لَھَا اَھْلٌ وَّھُوَلَھَا اَھْلٌ

हज़रते सय्यिदुना हाफ़िज़ जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : इस दुरूदे पाक का एक मर्तबा पढ़ना **ग्यारह हज़ार मर्तबा** दुरूद शरीफ़ पढ़ने के बराबर है। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السّادات ص١٥٣)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

चौदह हज़ार दुरूदे पाक का सवाब

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰی اٰلِہٖ عَدَدَ كَمَالِ اللّٰہِ وَكَمَا یَلِیْقُ بِكَمَالِہٖ

इस दुरूद शरीफ़ को सिर्फ़ एक मर्तबा पढ़ने से **चौदह हज़ार दुरूदे पाक** का सवाब मिलता है। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السّادات ص١٥٠)

एक लाख दुरूदे पाक का सवाब

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النُّوْر
الذَّاتِیْ وَالسِّرِّ السَّارِیْ فِیْ سَائِرِ الْاَسْمَآءِ وَالصِّفَاتِ

इस दुरूदे पाक को एक बार पढ़ा जाए तो **एक लाख बार दुरूद शरीफ़** पढ़ने का सवाब मिलता है। नीज़ अगर किसी को कोई हाजत दरपेश हो तो येह दुरूदे पाक पांच सो बार पढ़े। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हाजत पूरी होगी। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السّادات ص١١٣)

हर क़िस्म की परेशानी से नजात के लिये

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ
قَدْ ضَاقَتْ حِیْلَتِیْ اَدْرِکْنِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ

सय्यिद इब्ने आ़बिदीन رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने इसे एक फ़ित्नए अ़ज़ीम में पढ़ा जो दिमश्क़ में वाक़ेअ़ हुवा, इसे अभी दो सो मर्तबा भी नहीं पढ़ा था कि मुझे एक शख़्स ने आ कर इत्तिलाअ़ दी कि फ़ितना ख़त्म हो गया। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات ص١٥٤)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आबे कौसर से भरा पियाला

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ وَاَوْلَادِہٖ
وَاَزْوَاجِہٖ وَذُرِّیّٰتِہٖ وَاَھْلِ بَیْتِہٖ وَاَصْھَارِہٖ وَاَنْصَارِہٖ
وَاَشْیَاعِہٖ وَمُحِبِّیْہِ وَاُمَّتِہٖ وَعَلَیْنَا مَعَھُمْ اَجْمَعِیْنَ
یَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि जो शख़्स **ह़ौज़े कौसर से भरा पियाला** पीना चाहे वोह इस दुरूदे पाक को पढ़े। (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص١٢٢)

"रसूले रह़मत" के आठ ह़ुरूफ़ की निस्बत से दुरूदे ताज के 8 मदनी फूल

﴿1﴾ **जो** शख़्स उ़रूजे माह (या'नी चांद की पहली से चौदहवीं तक) शबे जुमुआ़ में बा'द नमाज़े इ़शा बा वुज़ू पाक कपड़े पहन कर ख़ुश्बू लगा कर

एक सो सत्तर बार इस दुरूदे पाक को पढ़ कर सो रहे, ग्यारह शब मुतवातिर (लगातार) इसी त़रह़ करे اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ होगा।

﴿2﴾ **सेहूर** व आसेब जिन्न व शैत़ान के दफ़्अ़ के लिये और चेचक के लिये 11 बार पढ़ कर दम करे اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा।

﴿3﴾ क़ल्ब की सफ़ाई के लिये हर रोज़ बा'द नमाज़े सुब्ह़ **साठ बार** और बा'द नमाज़े अ़स्र तीन बार और बा'द नमाज़े इ़शा 3 बार विर्द रखे।

﴿4﴾ दुश्मनों, ज़ालिमों, ह़ासिदों और ह़ाकिमों के शर से मह़फ़ूज़ रहने के लिये और ग़म व ग़ुरबत दूर होने के लिये चालीस शब मुतवातिर बा'द नमाज़े इ़शा 41 बार पढ़े।

﴿5﴾ रोज़ी में बरकत के लिये सात बार बा'द नमाज़े फ़ज्र हमेशा विर्द जारी रखे।

﴿6﴾ अ़क़ीमा (बांझ औ़रत) के लिये 21 ख़ुरमों (छुहारों) पर सात सात बार दम कर के एक ख़ुरमा (छुहारा) रोज़ खिला दे और बा'दे ह़ैज़ तुहर (या'नी पाकी के अय्याम) में हम बिस्तर हो ब फ़ज़्ले ख़ुदा नेक फ़रज़न्द (बेटा) पैदा हो।

﴿7﴾ अगर ह़ामिला पर ख़लल (या'नी तक्लीफ़) हो तो सात दिन बराबर सात मर्तबा पानी पर दम कर के पिलाए।

﴿8﴾ (जाइज़ मह़ब्बत मसलन मियां बीवी में मह़ब्बत) और हर मक़्सूद के लिये आधी रात के बा'द बा वुज़ू चालीस बार सिदक़ो यक़ीन के साथ पढ़े اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ मत्लूबे दिली ह़ासिल होगा। (आ'माले रज़ा, स. 22)

दुरूदे ताज

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ صَاحِبِ التَّاجِ وَ الْمِعْرَاجِ وَ الْبُرَاقِ وَ الْعَلَمِ ط دَافِعِ الْبَلَآءِ وَ الْوَبَآءِ وَ الْقَحْطِ وَ الْمَرَضِ وَ الْاَلَمِ ط اِسْمُهٗ مَکْتُوْبٌ مَّرْفُوْعٌ مَّشْفُوْعٌ مَّنْقُوْشٌ فِی اللَّوْحِ وَ الْقَلَمِ ط سَیِّدِ الْعَرَبِ وَ الْعَجَمِ ط جِسْمُهٗ مُقَدَّسٌ مُّعَطَّرٌ مُّطَهَّرٌ مُّنَوَّرٌ فِی الْبَیْتِ وَ الْحَرَمِ ط شَمْسِ الضُّحٰی بَدْرِ الدُّجٰی صَدْرِ الْعُلٰی نُوْرِ الْهُدٰی کَهْفِ الْوَرٰی مِصْبَاحِ الظُّلَمِ ط جَمِیْلِ الشِّیَمِ ط شَفِیْعِ الْاُمَمِ ط صَاحِبِ الْجُوْدِ وَ الْکَرَمِ ط وَ اللّٰهُ عَاصِمُهٗ وَ جِبْرِیْلُ خَادِمُهٗ وَ الْبُرَاقُ مَرْکَبُهٗ وَ الْمِعْرَاجُ سَفَرُهٗ وَ سِدْرَةُ الْمُنْتَهٰی مَقَامُهٗ وَ قَابَ قَوْسَیْنِ مَطْلُوْبُهٗ وَ الْمَطْلُوْبُ مَقْصُوْدُهٗ وَ الْمَقْصُوْدُ مَوْجُوْدُهٗ سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ خَاتَمِ النَّبِیِّیْنَ شَفِیْعِ الْمُذْنِبِیْنَ اَنِیْسِ الْغَرِیْبِیْنَ رَحْمَةٍ لِّلْعٰلَمِیْنَ رَاحَةِ الْعَاشِقِیْنَ مُرَادِ الْمُشْتَاقِیْنَ شَمْسِ الْعَارِفِیْنَ سِرَاجِ السَّالِکِیْنَ مِصْبَاحِ الْمُقَرَّبِیْنَ مُحِبِّ الْفُقَرَآئِ وَ الْغُرَبَآئِ وَ الْمَسَاکِیْنِ سَیِّدِ الثَّقَلَیْنِ نَبِیِّ الْحَرَمَیْنِ اِمَامِ الْقِبْلَتَیْنِ وَسِیْلَتَنَا فِی الدَّارَیْنِ صَاحِبِ قَابَ قَوْسَیْنِ مَحْبُوْبِ رَبِّ الْمَشْرِقَیْنِ وَ الْمَغْرِبَیْنِ جَدِّ الْحَسَنِ وَ الْحُسَیْنِ مَوْلٰینَا وَ مَوْلَی الثَّقَلَیْنِ اَبِی الْقَاسِمِ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ نُوْرٍ مِّنْ نُوْرِ اللّٰهِ ط یَآاَیُّهَا الْمُشْتَاقُوْنَ بِنُوْرِ جَمَالِهٖ صَلُّوْا عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَ سَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا

तरजमा : ऐ **अल्लाह**! रह़मत फ़रमा हमारे सरदार और हमारे आक़ा मुह़म्मद, ताज व मे'राज वाले, बुराक़ और बुलन्दी वाले पर, बलिय्यात व वबाएं, क़ह़त़ व मरज़, दुख और मुसीबत के दूर करने वाले पर, जिन का इस्मे गिरामी लिखा हुवा है बुलन्द है और **अल्लाह** करीम के नाम के साथ जुड़ा हुवा है लौह़े मह़फ़ूज़ और क़लम में रंग आमेज़ी किया हुवा है, अ़रब और अ़जम के सरदार, जिन का जिस्मे मुबारक हर ऐब से मुबर्रा, ख़ुश्बू का मम्बअ़, इन्तिहाई

पाकीज़ा, नूरुन अ़ला नूर, अपने घर और ह़रम में (इन तमाम अह़वाल के साथ आज भी मौजूद है) सुब्ह़ के रोशन और ख़ुश्नुमा सूरज, चौदहवीं रात के चांद, बुलन्दी के मआख़ज़, हिदायत के नूर, मख़्लूक़ की जाए पनाह, तारीकियों के चराग़, बेहतरीन ख़ुल्क़ व आ़दात वाले, उम्मतों की शफ़ाअ़त करने वाले, सख़ावत और करम के वाली पर दुरूदो सलाम और **अल्लाह** पाक उन का मुह़ाफ़िज़ है जिब्रीले अमीन ख़ादिम हैं और बुराक़ सुवारी है मे'राज उन का सफ़र है और सिदरतुल मुन्तहा उन का मक़ाम है और क़ाब क़ौसैन (कमाले क़ुर्बे इलाही) उन का मत़्लूब है और मत़्लूब या'नी कमाले क़ुर्बे इलाही ही मक़्सूद है और मक़्सूद ह़ासिल हो चुका है तमाम रसूलों के सरदार, तमाम अम्बिया के बा'द आने वाले, गुनहगारों की शफ़ाअ़त करने वाले, मुसाफ़िरों और अज्नबियों के ग़म गुसार, तमाम जहानों पर रह़्म फ़रमाने वाले, आ़शिक़ों की राह़त और मुश्ताक़ों की मुराद, जुम्लाहाए आ़रिफ़ों के सूरज, सालिकों के चराग़, मुक़र्रबीन की शम्अ़, फ़क़ीरों परदेसियों और मिस्कीनों से मह़ब्बत व उल्फ़त रखने वाले, जिन्नात और इन्सानों के सरदार, ह़रमे मक्का और ह़रमे मदीना के नबी, बैतुल मुक़द्दस और ख़ानए का'बा दोनों क़िब्लों के इमाम, दुन्या व आख़िरत में हमारे वसीला, क़ाब क़ौसैन की नवीद वाले, मश्रिक़ों और मग़्रिबों के रब के ह़बीब, इमामे ह़सन और इमामे ह़ुसैन के नाना, हमारे आक़ा, जुम्ला जिन्न व इन्स के वाली, या'नी अबुल क़ासिम मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह, **अल्लाह** पाक के नूर में से अ़ज़मत व रिफ़्अ़त वाले नूर पर दुरूदो सलाम, उन के नूरे जमाल के आ़शिक़ो ! ख़ूब सलातो सलाम भेजो उन की ज़ाते वाला सिफ़ात पर और उन की आल व अस्ह़ाब पर ।

दुरूदे तुनज्जीना के बारे में ईमान अफ़्रोज़ ह़िकायत

अ़ल्लामा इब्ने फ़ाकहानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه किताब "**अल फ़ज्रुल मुनीर**" में दुरूदे तुनज्जीना के बारे में एक वाक़िआ़ बयान करते हुए

फ़रमाते हैं कि पारसा शैख़ मूसा ज़रीर رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने मुझ से बयान किया कि वोह ब ज़रीअए कश्ती समुन्दरी सफ़र पर रवाना हुए, रास्ते में शदीद तूफ़ान ने आ लिया जिसे इक़्लाबिया (उलट पलट कर देने वाली) कहते हैं। बहुत कम लोग हैं जो इस तूफ़ान में फंस कर डूबने से बचते हैं, लोग डूबने के ख़ौफ़ से चीख़ो पुकार करने लगे, मुझे नींद आ गई, ख़्वाब में नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : कश्ती वालों को कहो कि वोह एक हज़ार मर्तबा येह दुरूद शरीफ़ اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَاۃً تُنَجِّیۡنَا بِھَا से ले कर بَعۡدَ الۡمَمَاتِ तक पढ़ें। मैं बेदार हुवा और कश्ती वालों को ख़्वाब बयान किया। हम ने मिल कर तीन सो मर्तबा ही पढ़ा था कि **अल्लाह** करीम ने तूफ़ान से नजात अ़ता फ़रमा दी। (مَطَالِعُ الۡمَسَرَّات ص٤٧١)

शैख़ मजदुद्दीन फ़िरोज़आबादी साहिबे क़ामूस ने, शैख़ ह़सन बिन अ़ली असवानी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के ह़वाले से बयान किया कि जो शख़्स येह दुरूदे पाक **(दुरूदे तुनज्जीना)** किसी भी मुश्किल, आफ़त या मुसीबत में एक हज़ार मर्तबा पढ़े **अल्लाह** तआ़ला उस मुश्किल को आसान फ़रमा देगा और उस का मक़्सद पूरा फ़रमा देगा। (مَطَالِعُ الۡمَسَرَّات ص٤٧١)

दुरूदे तुनज्जीना

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَاۃً تُنَجِّیۡنَا بِھَا
مِنۡ جَمِیۡعِ الۡاَحۡوَالِ وَالۡاٰفَاتِ وَتَقۡضِیۡ لَنَا بِھَا
جَمِیۡعَ الۡحَاجَاتِ وَتُطَھِّرُنَا بِھَا مِنۡ جَمِیۡعِ السَّیِّئَاتِ
وَتَرۡفَعُنَا بِھَاعِنۡدَکَ اَعۡلَی الدَّرَجَاتِ وَتُبَلِّغُنَا بِھَا
اَقۡصَی الۡغَایَاتِ مِنۡ جَمِیۡعِ الۡخَیۡرَاتِ فِی الۡحَیَاۃِ
وَبَعۡدَ الۡمَمَاتِ اِنَّکَ عَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ

तरजमा : ऐ **अल्लाह**! सय्यिदुना ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा पर ऐसी रह़मत नाज़िल फ़रमा कि तू इन के सबब हमें तमाम ख़ौफ़ों और आफ़तों से नजात दे और इन के सबब तू हमारी तमाम ह़ाजतों को पूरा फ़रमा और इन की बदौलत तू हमें तमाम गुनाहों से पाक कर दे और इन के ज़रीए तू हमें बुलन्द दरजात पर फ़ाइज़ फ़रमा दे और इन की बरकत से तू हमें तमाम नेकियों की आख़िरी इन्तिहा तक पहुंचा दे, ज़िन्दगी में और मौत के बा'द और बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है।

शिफ़ाए अम्राज़

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ طِبِّ الْقُلُوْبِ وَدَوَآئِهَا
وَعَافِيَةِ الْاَبْدَانِ وَشِفَآئِهَا وَنُوْرِ الْاَبْصَارِ وَضِيَآئِهَا
وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

बा वुज़ू मरीज़ को लिख कर दें कि ज़बान से चाटे या पानी में घोल कर पिला दें। शिफ़ा होने तक येह अ़मल बराबर करते रहें बि इज़्निल्लाह मौत के सिवा हर मरज़ को मुफ़ीद है।

दुरूदे माही के बारे में मछली की ह़िकायत

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه दरिया के कनारे वुज़ू कर रहे थे कि एक मछली आई और उस ने येह दुरूद शरीफ़ पढ़ा उन्हों ने दर्याफ़्त किया कि इस ने किस से सीखा उस मछली ने जवाब दिया कि एक दफ़्आ़ दरिया के कनारे पर मैं ने एक फ़िरिश्ते को पढ़ते सुना और याद कर लिया उसी रोज़ से हर आफ़त व बला से मह़फ़ूज़ हूं। (आ'माले रज़ा, स. 140)

दुरूदे माही

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ خَیْرِ الْخَلَآئِقِ
وَاَفْضَلِ الْبَشَرِ وَشَفِیْعِ الْاُمَمِ یَوْمَ الْحَشْرِ وَالنَّشْرِ وَصَلِّ
عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ کُلِّ
مَعْلُوْمٍ لَّکَ وَصَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ
وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ وَصَلِّ عَلٰی جَمِیْعِ الْاَنْبِیَآءِ وَالْمُرْسَلِیْنَ
وَصَلِّ عَلٰی کُلِّ الْمَلٰٓئِکَةِ الْمُقَرَّبِیْنَ وَعَلٰی عِبَادِاللّٰهِ
الصَّالِحِیْنَ وَسَلِّمْ تَسْلِیْمًا کَثِیْرًا کَثِیْرًا بِرَحْمَتِکَ
وَبِفَضْلِکَ وَبِکَرَمِکَ یَااَکْرَمَ الْاَکْرَمِیْنَ بِرَحْمَتِکَ
یَااَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ یَاقَدِیْمُ یَادَآئِمُ یَاحَیُّ یَاقَیُّوْمُ یَاوِتْرُ
یَااَحَدُ یَاصَمَدُ یَامَنْ لَّمْ یَلِدْ وَلَمْ یُوْلَدْ وَلَمْ یَکُنْ لَّهٗ کُفُوًا
اَحَدٌ بِرَحْمَتِکَ یَااَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने वाली बच्ची	1	दुरूदे तुनज्जीना के बारे में ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत	13
"اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَاسَیِّدَ الْمُرْسَلِیْنَ" के तीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से दुरूद शरीफ़ के 30 मदनी फूल	5	दुरूदे माही के बारे में मछली की ह़िकायत	15
दुन्या व आख़िरत की सुर्ख़रूई	8		

शफ़ाअ़त वाजिब हो गई

फ़रमाने मुस्त़फ़ा : صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस ने येह कहा :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْہُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَکَ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ

उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो गई ।

(الترغیب والترہیب، 2/329، حدیث: 30)

ऐ अल्लाह ! ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर रह़मत नाज़िल फ़रमा और उन्हें क़ियामत के दिन अपनी बारगाह में मुक़र्रब मक़ाम अ़त़ा फ़रमा ।

978-969-722-156-1
01082175

فیضانِ مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net

DAWAT-E-ISLAMI